International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 1 Ser. I || January 2019 || PP 91-97

स्वातन्त्रोयत्तर हिन्दी कहानीकार एवं उनकी कृतियों का सम्यक् अध्ययन

डॉ. महेश चन्द्र चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
नारायण कॉलेज,शिकोहाबाद

सारांश
हिन्दी साहित्य में कहानियों का कोई कम महत्व नहीं रहा है। सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि समय की माँग के आधार पर अलग–अलग समय में विभिन्न विषयों को लेकर कहानियाँ लिखी गयी है। इस स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी सैकड़ों कहानी संकलन और हजारों कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं जो अलग–अलग विषयों पर आधारित हैं और उस विषय का यथार्थ चित्रण करने में पूरी तरह सक्षम हैं। जो पाठक के पढ़ने पर उस घटना का वास्तविक रूप दर्शाने में सफल हैं।

परिचय

मैंने अपने कार्य में प्रमुख प्रतिष्ठित और चर्चित कहानीकारों को चुनने के साथ–साथ ऐसी कहानियों की विवेचन वस्तु को लिया है जिनके लेखक ज्यादा प्रख्यात नहीं है, किन्तु कहानियाँ अपनी गुणात्मकता के आधार पर अध्ययेतव्य बन गई हैं। स्वातन्त्र्योत्तर कहानी चाहे वह किसी विषय से सम्बन्धित रही हो, चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक और नारी समस्या की हो, मैंने अध्ययन के लिये चुना है। मैंने अपने अध्ययन में जिन कहानीकारों और उनकी कहानियों को चुना है, उसका विवरण इस प्रकार है–

मोहन राकेश

मोहन राकेश की पहली कहानी ''दोराहा'' है, जो ''सरिता'' में 1997 में छपी और ''इन्सान के खण्डहर'' उनका पहला कहानी संग्रह है।[1] कालक्रमानुसार उनके निम्नलिखित 5 कहानी संग्रह प्रकाशित हुऐ –

1. इन्सान के खण्डहर
2. नये बादल
3. जानवर और जानवर
4. एक और जिन्दगी
5. फौलाद का आकाश

1. मोहन राकेशः सामाजिक सरोकार के कहानीकार, डॉ0 रतनलाल वर्मा, पृ0 42.

इनमें संग्रहीत कहानियों को बाद में चार खण्डों – क्वार्टर, पहचान, वारिस, एक घटना मे प्रस्तुत किया गया है। ''एक घटना'' मे प्रारम्भिक कहानियाँ संग्रहीत है। इस संग्रह से ज्ञात होता है कि राकेश के साक्ष्य में ''भिक्षु'' उनकी पहली प्रकाशित कहानी है। इधर राकेश के सभी कहानियों को एक जिल्द में प्रस्तुत कर दिया गया है – मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ। इसमें कुल 66 कहानियाँ है।

निर्मल वर्मा

नयी कहानी के दौरान उभरे कहानीकारों में निर्मल वर्मा संभवतः सर्वाधिक विवादास्पद रहे हैं। विजय मोहन सिंह की यह धारणा सही हैः ''साहित्यिक मूल्यांकन के दो छोर निर्मल की कहानियों की श्रेष्ठ अवस्था पतनशील साहित्य की केन्द्रीय प्रवृत्ति के रूप में देखते रहे हैं। इस रूप में निर्मल वर्मा की कहानियाँ एक निकष का काम करती रही हैं।''[1] ''परिन्दे'', ''जलती झाड़ी'', ''पिछली गर्मीयों में'', '' बीच बहस में'', ''कच्चे और कालापानी'' कहानी संग्रह हैं।

इसमें संदेह नहीं की निर्मल वर्मा की अधिकतर कहानियों की जमीन संकुचित और एक आयामी है। उनकी कहानियों में अकेलापन भोगने के लिये अभिशप्त चरित्रों की मानसिकता प्रायः मुखर है। ये चरित्र यातो प्रवासी भारतीय हैं या अपने ही देश में निर्वासित या आत्म–निर्वासित व्यक्ति है। अतः यह अस्वाभाविक नहीं है कि निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलापन एक अभिशाप या आतंक बनकर व्यक्त हुआ है।

राजेन्द्र यादव

राजेन्द्र यादव ने आजादी मिलने के 2–4 वर्ष पहले से लिखना शुरू किया। उन दिनों वे आगरा कालेज में पढ़ रहे थे। इनकी पहली प्रकाशित कहानी प्रतिहिंसा है, जो मई 1974 में रामशरण सिंह सहगल के पत्र ''कर्मयोगी'' में

छपी।''[1] कालान्तर में हंस, गुलदस्ता, अप्सरा आदि पत्र–पत्रिकाओं में छपने का सिलसिला शुरू हुआ। 1950 से पहले एक कहानी संग्रह ही छप गया। उसका नाम था – ''रेखाएँ, लहरें और परछाइयाँ''। दूसरा कहानी संग्रह है, जो बीकानेर से छपा। उस समय के खौलते हुए वातावरण में यादव ने खूब लिखा। उनकी अधिकतर कहानियों में थीम टूटना है। कहीं कोई रूढिग्रस्त पूँजीवादी मनोवृत्ति के हाथों आहट हो टूट रहा है। (जहाँ लक्ष्मी कैद है), कोई दो वर्गो की मानसिकता के टकराव से टूट रहा है (टूटना) कहीं ''तीसरे'' के प्रवेश की चिन्ता से टूटता हुआ हृदय है (पुराने नाले पर नया फ्लैट) तो कही आर्थिक अभावों की भार से क्षतविक्षत जीवन के दुखदायी जीवन के प्रसंग है (लंच टाइम) कोई पारिवारिक तनाव को झेलने में असमर्थ होकर आत्महत्या की बात सोच रहा है (अभिमन्यु की आत्महत्या) तो कहीं कोई महत्वाकांक्षा, प्रतिभा से सम्पन्न होने के कारण दम घोटू परिवेश में अधिक दिन जी नहीं पाता (खेल–खिलौने) इन सभी कहानियों में मध्यवर्गीय या निम्न वर्गीय जीवन के इर्द गिर्द घूमती विसंगतियों और उनके दबाब से आहत मूल्यों और भावनाओं को भरपूर विश्वसनीयता के साथ उभारा गया है।

नयी कहानी के दौरान में जिन कहानीकारों ने समूचे परिप्रेक्ष को गैर–रोमांटिक नजरिये से देखा, उनमें यादव उल्लेखनीय है। बाद की ''ढोल'' आदि कहानियों को छोड़ दे न तो वे अतीत में गोता लगाते है या कोरी भावुकता से संचालित होते है और न रूपवादी स्थान में ''कथ्य'' को नजर अन्दाज कर देते है।

नमिता सिंह

महिला कथाकारों पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे घर परिवार प्रेम टूटन आदि की कहानियाँ ही लिखती रहती हैं और यह उनकी सामर्थ्य सीमा है। इस आरोप को नमिता सिंह का लेखन वेबुनियाद सिद्ध करता है। महिला दायरों से बाहर आकर नमिता सिंह ने निम्न मध्य वर्गीय आदमी के संघर्षों से अपने को सम्बद्ध किया है और प्रगतिशील वैज्ञानिक मानवतावादी विश्वदृष्टि की कहानियाँ लिखकर अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है।

नमिता सिंह की कहानी ''एक निर्णय'' का प्राध्यापक, खेल आकाश के नीचे का राजेश, नाले पार के आदमी'' की सिम्मी बतौर फैशन वामपंथी है, छद्म प्रगतिशीलता को ढोते है।

नमिता सिंह के पात्र यथास्थिति के खिलाफ संघर्ष करते हैं। दुष्कर स्थितियों का सामना करते हुए प्रगतिशील वैज्ञानिक दर्शन से प्रेरित होकर शोषण – युक्ति के लिए अपनी जुझारू भूमिका निर्वाह करते है। ''संन्नाटे से आगे'', ''परते'', ''मुक्ति'' आदि ऐसी ही कहानियाँ है। अनावाश्यक रूढियाँ संस्कार और साम्प्रदायिकता के विरूद्ध चेतना पैदा करने वाली कहानियाँ महत्वपूर्ण है।

भीष्म साहनी

भीष्म साहनी मूलतः मध्यमवर्गीय विसंगतियों के कथाकार हैं। मध्यम वर्ग में व्याप्त कुंठा, घुटन, पीड़ा विखराव, रूढियों, झूठी मान्यताओं आदि इनके कथाधार है। आज की नारी की कृत्रिमता का उद्घाटन भी इन कहानियों में हुआ है। इनके प्रमुख कथा संग्रह इस प्रकार है – ''भटकती राख'', ''शोभायात्रा'', ''निशाचर'' आदि प्रसिद्ध हैं। कहानियों में ''खून का रिश्ता'', ''बात की बात'', ''पास–फेल'', ''माता विमाता'', ''सिफारिशी'', ''चिट्ठी'', ''यादें'', ''कुछ और साल'' आदि के नाम विशेष महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु

फणीश्वरनाथ रेणु एक आंशतिक कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी कहानियों में पूरा ग्रामीण परिवेश देखने को मिलता है। इनके प्रमुख आलोच्य कहानी संग्रह इस प्रकार है – ''आदिम खोर'', ''ठुमरी'', ''आदिम'', रात्रि की महक'', ''एक श्रावणी दोपहर की'' और ''अच्छे आदमी'' आदि प्रसिद्ध हैं।

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर जी बड़े संवेदनशील कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के विविध क्षेत्रों की कथा कहती हैं। सामाजिक दायित्व का अनुभव और निर्वाह करने वाले विष्णु जी की कहानियों में उच्चे मानव – मूल्यों की प्रतिष्ठा का मांगलिक प्रयास हुआ है। अर्न्तद्वन्द का मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों को हृदयस्पर्शिता प्रदान करता है। इनकी कहानियों में कल्पना का आकाश नहीं, जीवन की कठोर भूमि है। इनकी दृष्टि यथार्थ से बूंद–बूंद कर ही व्यापक, गहन, निर्मल और स्निग्ध बनती गयी है। विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ यथार्थ तथा भावना से निर्मित है। ''इक्यावन कहानिया'', ''तीसरा आदमी'', ''एक और कुन्ती'' आदि इनके कहानी संग्रह एवं कहानियाँ हैं।

कमलेश्वर

कमलेश्वर का नयी कहानी के कथाकारों में सबसे सशक्त एवं महत्वपूर्ण योगदान है। कहानियों में कमलेश्वर मूलतः कस्वाई मनोवृत्ति के कहानीकार हैं। इन कहानियों के कस्वाई आदमी की भटकन, अकेलेपन और सूनेपन का मूल स्वर है। कस्बाई स्त्रियों की परिवर्तित स्थिति का इन्होंनें अच्छा चित्रण किया है और कुछ कहानियों में नगर बोध की विद्यमान है। इन्होंने वेश्या जीवन को लेकर भी कई कहानियाँ लिखी हैं। सम्बन्धों में परिवर्तन को आधार बनाकर भी इन्होंनें कुछ कहानियाँ लिखी हैं। इनके प्रमुख आलोच्य कहानी संग्रह इस प्रकार हैं – ''सोयी हुई दिशायें'', ''फैसला'', ''मांस का दरिया'', ''श्रेष्ठ कहानियाँ'', ''राजा निरबंसिया'', ''मेरी प्रेम कहानी'', ''अलग–अलग'', ''एक बाप'' और ''कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ'' आदि प्रसिद्ध संग्रह है और कहानियों में ''नीली झील'', ''दुःख भरी दुनियाँ'', ''एक थी

विमला'', ''सोई हुई दिशायें'', ''कमरा और गली'', ''दुनिया बहुत नई है'', ''जो लिखा नहीं जाता'', ''दुख के रास्ते'', ''भरे पूरे अधूरे'', ''अलग–अलग'' और ''एक भय'' आदि कहानियों के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं। जो कहानियों के उद्देश्य की कसौटी पर पूरी तरह से खरी उतरती है।

विवेकीराय

डॉ0 विवेकीराय बदलते सामाजिक जीवन के अत्यन्त आधुनिक कथाकार हैं। इनके कहानी प्रस्तुत करने का कुछ अपना ही ढंग है और इस ढंग में सहजता के साथ सही सम्वेंदनीय कोणों का आकर्षक रूप दर्शाया है। इस समकालीन लोक जीवन के साक्षात्कार का वास्तविक रूप इनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जो एक शिल्पकार के जुदाई चमत्कार जैसा लगता है। कहानियों में चित्रित चरित्रों के पीछे जो एक वियट गंवई जीवन का सांस्कृतिक परिवेश है वह बहुत ही करूण है मनमोहन है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह इस प्रकार है – ''कालातीत'', ''जीवन परिधि'', ''नयी कोयल'', ''गूंगा जहाज'', ''और बेटे की विक्री'' आदि प्रसिद्ध है और ''मकड़ जाल'', 'विद्रोह'', ''इन्द्रधनुष'', ''अब्बल चीज'', ''मित्रहानि'', ''नयी नाव'', ''अतिथि'', ''गोता'', ''तारीखें'', ''विलायति डिजायन का अफसर'', ''स्वंय मेले'', ''यह जमाना'', ''सीवन का कोल्हू'', ''दादा कह गये'', ''नदी नाव संयोग'', ''समाजवादी सुबह एक दिन'', ''परन्तु'', ''कालातीत'' और ''बेटे की विक्री'' आदि विशेष रूप से प्रमुख हैं। कहानियों में इतनी सजीव और सरल है कि पाठक के मन को मोह लेती है और वह पढ़ने को विवश हो जाता है।

रामदरश मिश्र

स्वतन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास–साहित्य को जिन साहित्यकारों ने समृद्ध किया है और दिशा दी है, उनमें रामदरश मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है। मूलतः उनकी कृतियों में नये मूल्यों के अन्वेषण की छटपटाहट है। जिन संस्कारों को लेकर कथाकार ने आरम्भ में लेखनी उठायी, वे गाँधीवादी रहे, परन्तु समय के साथ उनका अर्थहीन अंश झड़ता गया है और सम्प्रति गाँधीवाद, समाजवाद और आधुनिकता योग को कथाकार रामदरश मिश्र के समकालीन कथाकार की पहचान के रूप में रेखांकित किया जा सकता है।

रामदरश मिश्र की कहानियों में बदलते समय के साथ अभिव्यक्ति के स्तर पर जो वस्तु कभी नहीं बदलती है – वह है गहरी लोक सम्पृत्ति। लोकभाषा को अपनाकर कहानीकार रामदरश मिश्रा कहानियों की जीवन्त सहजता प्रदान की है। आलोच्य कहानी में उनकी कहानी ''सर्पदंश'' है।

मन्नु भण्डारी

मन्नु भण्डारी की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की समस्याओं को आधार बनाकर लिखी गयी हैं। नारी जीवन की पीढ़ा, उसकी दयनीय स्थिति ''प्रेम त्रिकोण'', ''स्त्री पुरूष सम्बन्धों की समस्या'', ''व्यक्ति के अहं'' सामाजिक परिवेश व तज्जयन विसंगतियों से उनका टूटना, ''पीढ़ी संघर्ष आदि इनकी कहानियों के प्रमुख विषय हैं। इसके अतिरिक्त नारी की पारिवारिक और वैयक्तिक समस्यायें, नारी की रूढिमुक्त, कामी हृदय का स्पन्दन, उसका द्वन्द तथा विषम परिस्थितियों से विरोध आदि तत्वों में इसकी कहानियों में पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति पायी जाती है। उनके आलोच्य प्रमुख कथा संग्रह इस प्रकार है – ''त्रिशुंक'', मेरी प्रिय कहानियाँ'', ''एक प्लेट सैलाव'', ''ईसा के घर में इंसान'', ''श्रेष्ठ कहानियाँ और अपने से परे'' आदि। ''क्षय'', ''नशा'', ''आकाश के आइनें में'', ''सजा'', ''तीसरा आदमी'', ''नयी नौकरी'', ''ऊँचाई'', ''बन्द दरवाजों के साथ'', आदि प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। जो पाठक को एक सजीव रूपी घटना से अवगत कराती है और भाव–विभोर कर देती हैं। कहानियाँ नारी चिन्तन के विभिन्न आवामों को सफल ढंग सं वर्णित करने में पूरी तरह सक्षम हैं और वास्तविक मनोभावों की एक सफल कुँजी है।

नरेन्द्र कोहली

वास्तव में विषय वैविध्य नरेन्द्र कोहली के शिल्प की एक प्रमुख विशेषता है। उनकी कहानियों में पृथक्–पृथक् पृष्ठभूमि है। उनके शिल्प चमत्कार का एक संक्षिप्त सी स्थिति जिसके भीतर घटनात्मक संघटन नहीं के बराबर है। एक लम्बी कहानी के रूप में पूरे समय तक पाठकों को उलझाए रखता है। कथाकार नरेन्द्र कोहली की प्रकृति मूलतः गम्भीर चिन्तनात्मक रूप में निखरी है परन्तु इस गाभ्यीय से कहानी की रसात्मकता में कहीं बाधा नहीं पड़ती है तथा उसका रोमांस बना रहता है। ''शटल'' कहानी उनकी विवेच्य कहानियों में है।

रघुवीर सहाय

रघुवीर सहाय की कहानियों में अन्तर्द्वन्द के उस क्षण को पकड़ने की सजगता दिखायी देती है जहाँ बाह्य परिस्थिति या बाह्य द्वन्द्व की तीव्रता अन्तर्द्वन्द को अवचेतन में ला देती है। यह चेतना को प्रभावित करने वाले क्षण कोई असाधारण क्षण नहीं, समय के प्रवाह में बहने वाले सामान्य क्षण है जो संवेदनशील हृदय के स्पर्श के सामान्य होकर भी, विशिष्टता के गौरव ग्रहण कर लालयत हैं। रघुवीर सहाय की ''सेव'', ''उमस के बाहर'', ''एक छोटी सी यात्रा'', ''एक जीता जागता व्यक्ति'', आदि कहानियों में ऐसे ही लक्षणों के प्रभाव को बाँधा गया है। रघुवीर सहाय की कहानी ''जो आदमी हम बना रहे हैं में परम्परागत संघर्ष की भावनाओ से रहित सामान्य और अकिंचन क्षणों को महत्व मिला है।

मेहरून्निसा परवेज

श्रीमती मेहरून्निसा परवेज के कथ्य में एक पुरूष दो नारी अथवा एक नारी दो पुरूष के त्रिकोण बार–बार आवर्त की तरह घूमते रहते हैं, इन दुहराहटों से ऐसा लगता है कि लेखिका के मन में कोई ग्रन्थि तो नहीं पनप रही हैं ''या कि इस समस्या के बिना कोई कथा रची ही नहीं जा सकती या कि वह किसी मानसिक बीमारी का संकेत है ? अगर ऐसा है, जो यह बहुत चिन्ता की बात है। ''अन्तिम चढ़ाई'' उनकी विवेचय कहानी है।

कृष्णा अग्निहोत्री

श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में एक और अनुभूति पक्ष की व्यक्तिगत जिम्मेदारी, ईमानदारी है, दूसरी ओर भाषा शैली का वैभव है, आदर्श एवं यथार्थ का स्वस्थ एवं समानुपातिक समन्वय रखने का प्रयत्न करने के पश्चात् भी उनके लेखन में यथार्थ के प्रति अधिक झुकाव है, आधुनिक समाज की बहूविध विडम्बनायें, भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों को लेखिका ने प्रस्तुत किया है। ''जिन आदमी'' या ही बनारसी रंगबा, विरासत उनकी विवेच्य कहानियाँ हैं।

शेखर जोशी

शेखर जोशी की कहानियों में परिवेश का सफल सजीव और यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ है। शेखर जोशी भी कस्वाई परिवेश के एक मुख्य कथाकार हैं। कुछ कहानियों में प्रणय और टूटते हुए सम्बन्धों का चित्रण किया गया है। इनके आलोच्य संग्रह इस प्रकार हैं – ''साथ के लोग'' और ''मेरा पहाड़'' आदि मुख्य हैं। ''प्रश्न वाचक'', ''आकृतियों'', ''समर्पण'', ''मृत्यु'', ''दौड़'', ''रास्ते'', ''बदबू'' और ''और ''साथ के लोग'' आदि प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

गोविन्द मिश्र

गोविन्द मिश्र का समसामयिक जीवन के विषयों पर लिखी जाने वाली कहानियों के एक सुप्रतिष्ठित कहानीकार है जिन्होनें अपनी कहानियों में जीवन के नैतिक मूल्यों और संघर्षों की घटनाओं का वर्णन किया है जिसे पढ़कर पाठक को एक अपनी तरह की ताजगी, स्फूर्ति और शक्ति मिलती है। इसके प्रसिद्ध आलोच्य कहानी संग्रहो में ''रगड़ खाती आत्म हत्यायें'', ''नये पुराने माँ–बाप'', ''अंतपुर'', ''धासू'', ''खुद के खिलाफ'', ''बाक इतिहास'', ''अपाहित'' तथा ''मेरी प्रिय कहानियाँ'' आदि विशेष प्रसिद्ध संग्रह है तथा कहानियों में ''एक बूंद उलझी'', ''पगला बाबा'', ''अर्द्धवृत्त'', ''प्रतिमोह'', ''भायकाल लोबो'', ''सुमंदी की खोली'', ''आदेश'', ''गुत्थी'', ''सिर्फ इतनी'', ''रोशनी'' और ''अर्थ ओझल'' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी कहानियाँ जीवन में आय विशेष परिवर्तनों को उजागर करती है तथा कहानियों में आधुनिकता के नवीन आयामों को उभरने का एक सफल प्रयास किया गया है। साथ ही घटनाओं में जीवन की गहरी सच्चाई के यथार्थ दर्शन होते हैं। जो पाठक के मानस पटल पर एक तूफान की तरह छा जाते है और विशेष विभिन्न स्थितियों से अवगत कराकर ही छोड़ते है। इस प्रकार गोविन्द मिश्र की कहानियाँ अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

गिरिराज किशोर

गिरिराज किशोर की कहानियाँ अधिकांशतः मध्यमवर्गीय सामाजिक संघर्ष और मनोवृत्तियों को लेकर लिखी गयी हैं। विभिन्न कहानियाँ पुरातनता और नवीनता के संघर्ष को चित्रित करती हैं। इसके साथ ही लेखक ने सैक्स को भी महत्व दिया है। इनकी कहानियों में परिवर्तित जीवन मूल्यों का संघर्ष है। उनके लिये मानव और उसका संघर्षशील परिवेश सर्वोपरि है जो उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से विविधता और संघर्ष की व्यापकता का दर्शन कराया है। उनकी सहानुभूति प्रतिष्ठान को न मिलकर इन्सान को मिलती है। जो अपनी पहचान बनाने के लिये दिन रात बूझता रहता है। उसकी इसी विशेषता ने अपने समकालीन कथाकारों से अलग अपनी एक महत्वपूर्ण पहचान बनायी है। इनके आलोच्य कथा संग्रह इस प्रकार है – ''नीम के फूल'', ''चार मोती बेआब'', ''पेपरवेट'', ''रिक्सा और अन्य कहानियाँ'', ''शहर दर शहर'', ''जगन्तारानी'', ''हम प्यार कर लें'', ''गाना बड़े गुलाम अली खाँ का '', ''चूंहे'', ''फ्राक बाला घोड़ा'', ''निकट वालना राईस क्लर्क'', ''रेत'', ''गाउन'', ''शीर्षक हीन'', ''चेहरे'' और ''अलग–अलग कद के आदमी'' आदि विशेष प्रसिद्ध है। ''तिमोली सब पर हावी है'', ''ईश्वर को यही मंजूर था'', ''गुन हजार'', ''खरबूजे'', ''चरनी का असमंजस'', ''पाँचवा परता'', ''वह हंसा क्यों नहीं'', ''गाना बड़े गुलाम अली खँ का'' और ''हुस्ना अब मै वापस नहीं आ सकता हूँ,, आदि कहानियाँ विशेष प्रसिद्ध है।

राजी सेठ

राजी सेठ की कहानियों में गहरे और आंतरिक संघर्षों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इनकी कहानियाँ मनुष्य की आन्तरिकता को साथ लेकर चलती हैं। कहानियों में वर्णित द्वन्द्व कहीं हमारे सामाजिक मनस और व्यक्ति मनस के बीच है तो कहीं एक जीवन व्यवस्था में दूसरी व्यवस्था के बीच इनमें व्यक्ति और समाज, भीतर और बाहर, सामयिक और पुरातन का घपला नहीं है। कहानियों की कथा एक अर्थवान् संशिष्ट कथा सृष्टि है जो अपने बेहतर संसार से निपटने के औजार भी कथा द्वन्द के रूप में खुद ही पैदा करती है। कहानियाँ चिन्ता प्रधान होने के कारण आज के वर्तमान समय के बिल्कुल निकट है और एक नयी नैतिकता की रचना की ओर अग्रसर दीखती हैं। जीवन के यथार्थ का निष्करण उद्घाटन करती हुई जीवन के प्रति गहरी अवस्था को प्रस्तुत करती है। इनके आलोच्य कहानी संग्रह इस प्रकार है – ''अंधे मोह से आगे'', ''तीसरी हथेली'', ''मेरे लई नई और यात्रा मुक्त'', ''आदि प्रसिद्ध है। ''मेरे लई नई'' कहानी संग्रह पंजाबी भाषा के परिवेश एवं वहाँ की सांस्कृतिक को प्रस्तुत करने में पूरी तरह समर्थ है। कहानियों में ''खेल'',

''आमने–सामने'', ''यहीं तक'', ''ढलान पर'', ''यात्रा मुक्त'', ''उसी जंगल में'', ''तुम भी'', ''मिलों लम्बा पुल'', ''उन दोनों के बीच'' आदि कहानियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध है जो मानवीय संवेदना का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

मिथिलेश्वर

मिथिलेश्वर एक ऐसे युवा पीढ़ी के कथाकार है जिन्होंने ग्रामीण जनता के सामाजिक और मानवीय यथार्थ का जटिलतम स्तरों का सहज उद्घाटन अपनी कहानियों में किया है कहानियों में संर्घषशील जीवन की एक झलक देखने को मिलती है कि मानव अपना जीवन व्यतीत करने के लिये कितना संघर्ष करता है। मिथिलेश्वर की इसी विशेषता के सन्दर्भ में ''हरिहर काका'' के बारे में डॉ0 नामवर सिंह ने कहा है कि इस कहानी का तथ्य इतना सम्भव है कि बिना तत्व सिंगार पर भी पूरा असर डालती है।''[1] वस्तुतः इस संग्रह में ऐसी कहानियाँ है जो कि जिन्हें आवश्यक रूप में पढ़ा जाना चाहिए। इनके प्रयास व प्रमुख कहानी संग्रह इस प्रकार हैं – ''एक में अनेक बाबू जी'', ''बन्द रोस्तों के बीच'', ''दूसरा महाभारत'', ''मेथना का निर्णय'', ''गाँव के लोग'', '' तिरिया जनम'', '' विग्रह महाभारत'' मेथना और मिथिलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ तथा ''हरिहर काका'' और अन्य कहानियाँ आदि प्रमुख कहानी संग्रह है। ''हरिहर काका'', ''जहाज का पंछी'' ''एक सड़क और तीन सौदेवाज'', ''चर्चाओं से परे'', ''उनकी जिन्दगी'', ''घूस देने वाला'', ''गबूदन'', ''परीक्षा और विश्वविद्यालय'', ''शिष्टाचार की समझ'', ''जंगल होते शहर'', ''दण्ड रिश्ते और तब तक'' आदि प्रमुख कहानियाँ है जो घटनाओं का एक वास्तविक एवं सजीव सा चित्रण सा पाठक के समक्ष उपस्थिति करती हैं।

सुरेन्द्र तिवारी

सुरेन्द्र तिवारी आदमी की जागरूकता प्रत्यक्ष करने वाले कहानीकार हैं। इनकी कहानियों की सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे कहानियाँ यही अर्थों में जुझारू व्यक्तियों की कहानियाँ हैं। नगरों और महानगरों में रहने वाला आदमी किस प्रकार जूझते हुए अपना जीवन जीता है। महानगरीय जीवन को समझने के साथ ही विषय वैविध्य की दृष्टि से भी इनकी कहानियाँ अपनी अमिट छाप छोड़ने में पूर्ण समर्थ हैं। आदमी को मैंने रहकर जीते जीने की लाचारी और अपने चारों ओर फैली हुई गन्दगी से आँख घूरते हुए निकल जाने की प्रवृत्ति जिस तीव्रता से आज फैली है उसे हमने निष्क्रिय ही नहीं किया बल्कि निरीह भी बना दिया है। सब कुछ को एक अव्यक्त पीड़ी और मौन असहमति के बीच आसानी से सहते हुए, सुविधा जीवी वर्ग पर झींकते हुए व्यर्थता और बिडम्बना के बीच आज का औसत आदमी जी रहा है। इनकी प्रमुख कथा संग्रहों में दूसरा फुटपाथ, इसी शहर में महानगर और मील का पहला पत्थर आदि उल्लेखनीय हैं और कहानियाँ में सामना, प्रहार, अंधेरा, अन्ततः, लड़ाई, बार्ड न0 टू, पेशा आवृत्तिः निवृत्ति, विस्थापित, कलियुगी, प्रलाप, साथ में सन्नाटा अनिकेत और बावजूद आदि विशेष रूप में प्रसिद्ध हैं।

विजय मोहन सिंह

विजय मोहन सिंह आधुनिक भावबोध की अभिव्यक्ति देने वाले सशक्त कहानीकार हैं। उनकी दृष्टि में आज की समाज की व्यवस्था कहानी परिवर्तित भावबोध की कहानी है। इन्होंने समाज की व्यवस्था का चित्रण किया है। सम्बन्धों की अर्द्धहीनता, तथा मन की सही स्थिति का चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है। इनके प्रमुख आलोच्य कहानी संग्रह इस प्रकार है – ''एक बंगला बने न्यारा'' और आज की कहानी'' आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। कहानियों में ''एक तस्वीर के चारों ओर'', ''भीड़ के बाद'', ''ये दोनों'' तथा टट्टू सवार और आज की कहानी आदि के नाम महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय हैं।

ऊषा प्रियंवदा

ऊषा प्रियंवदा ने आज के नारी जीवन की विसंगतियों को सोचा समझा है और उपनी कहानियों में उन्हें आत्मसात् किया है। परिवतर्तित सन्दर्भों, नई परिस्थितियों और उलझनपूर्ण मनः स्थितियों में नारी के फिट होने की प्रवृत्ति और आधुनिकता तथा भारतीय संस्कारों के मध्य सूक्ष्म द्वन्द को उन्होंने सफलता पूर्वक चित्रित किया है। यद्यपि लेखिका अस्तित्ववादी जीवन दर्शन से पूर्ण प्रभावित हे जिसके फलस्वरूप उनके पात्रों में अनास्था, भय और संत्रास बना रहता है, पात्रों में परिस्थितियों से उबरने का साहस भी नहीं है, फिर भी नारी की दुविधा और उसकी छटपटाहट का ऐसा सफल चित्रांकन अन्यत्र विरत है।

ऊषा जी की कहानियों में शहरी जीवन और परिवार की अनुभूति प्रवण चित्र दिखाई पड़ते हैं। आधुनिक नगर बोध की उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन इनकी कहानियों में गहरा प्रभाव छोड़ती हैं।

मंजुल भगत

मंजुल भगत के कथानकों में ''रिवीजन'' नहीं होता बल्कि घटनाओं की अलग–अलग भूमिकाओं से युक्त ''वैरायटी'' होती है। चतुर्थ वर्ग में उनका उठाया हुआ कथानक ओर पात्र इतने सहज और तरीके से उठकर आये हैं कि आश्चर्य होता है आधुनिक अभिजात्य से छटकर मंजुल की कलम एकदम कैसे इस वर्ग पर जा टिकी है, जिसे समाज हमेशा हेय मानता है। उन्होंने स्वयं कहा है कि उनकी कहानियों के पात्र न कायर है, न विद्रोही, उनमें स्थितियों से टकराकर टिके रहने की क्षमता है। समस्याओं से विमुख होकर पलायन उन्होंने कभी नहीं किया। उनके नारी पात्रों में शिक्षित, आधुनिकाएँ, बृद्धाएं नहीं व्यामता, परिस्थितियों से जूझता जरूर है, ध्वंसात्मक विद्रोह में मंजुल भगत की नायिकाओं का विश्वास नहीं है – अपना–अपनस दामन, सफेद कौआ उनकी विवेच्य कहानियों में हैं।

मृदुल गर्ग

उनका साहित्य भी तदनुरूप ही सुदर्शन है। लेखन भी बोल्ड है, सहानुभूति न ही बाँटती स्वाभिमान उनमें कूट–कूट कर भरा है, वे तत्व के एक अंश को लेकर उसे ''ग्लोरिकाई'' नहीं करती, प्रत्युत उसको सम्पूर्णता में लाती है, जीवन में दुराव छिपाव ये जानती नहीं और अपने लेखन को भी उन्होंने उसी के अनुरूप ढाला है, उनकों जैविक तृष्णाओं की सहज, स्पष्ट अभिव्यक्ति भी अपने प्रति बोला गया सच है, एक सूक्ष्म पारदर्शी वेदना धारा उनके लेखन और व्यक्तित्व में बहती हुई दिखायी पड़ती है वह कभी हंसी के नीचे झलकती है, कभी शत्रु आसदी बनकर उभरती है। ''उर्फ सेम'' एवं भीतर बाहर उनकी विवेच्य कहानी है।

ममता कालिया

ममता कालिया को लेखन विशेष रूप से भारतीय नारी के परिवेश के इर्द–गिर्द घूमता हैं, वे नारी की मानसिकता से फूटते हुए कुछ प्रश्नों को उठाती है एवं लक्ष्यों का पोस्टमार्टम (शव परीक्षण) सा करती हुई, उनकी सार्थकता को बीन–बीन कर रखती है। आज के समाज के मानस में कुवांरेपन की धारणा अथवा पति–पत्नी के विभिन्न दिशाओं में चलने के कारण गृहस्थ जीवन की अवधारणा ऐसे ही जीवन्त तथ्य हैं, जो ममता कालियों की कथाओं को गति देते हैं। ''प्रतिदिन'' उनकी विवेच्य कहानी है।

मणिक मोहिनी

मणिक मोहिनी में कहानी की अद्‌भुत क्षमता है। वे जिन्दगी की छोटी–छोटी बातों से कहानी का ताना–बाना बुन लेने की कक्षा में प्रवीण हैं। वे बड़ी सादगी से मनःस्थितियों का चित्रण करती हैं और बड़ी सहजता से आन्तरिक सच्चाई और वाह्य वास्तविकता में तालमेल स्थापित कर देती हैं। इस सफलता का मुख्य कारण है उनकी भाषा, जो ''अपना–अपना सच'', ''ढाई आाखर प्रेम का'' उनकी विवेच्य कहानी है।

नासिरा वर्मा

नासिरा वर्मा नयी पीढ़ी की कथाकार हैं। इनकी अधिकांश कहानियाँ नारी जाति की घुटन बेबसी और मुक्तिकारी छटपटाहट का विषयासार लेकर लिखी गयी है। उन्होंनें एक रूढिग्रस्त समाज की बुनियादी समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में स्पष्ट रूप से दर्शाया है साथ ही ये कहानियाँ नारी की जातीय त्रासदी का मर्मान्तक दस्तावेज हैं, फिर चाहे वह किसी भी सामन्ती समाज में क्यों न हों ? अपनी रचना शिल्प की दृष्टि से ये कहानियाँ बहुत उचित एवं सधी हुई हैं। ये कहानियाँ अपने चरित्र की तरह गहन अवसाद, छटपटाहट और बदलाव की चेतना से भरी हुई हैं। इनके प्रमुख कहानी संग्रह ''भामी कागज'', ''कित्ता जाग'', ''संसार अपने–अपने'' और ''पत्थर गली'' आदि प्रमुख हैं। इनके कहानी संग्रह वर्तमान ईरानी जन जीवन पर आधारित हैं। कहानियों में सरहद के इस पार'', ''बन्द दरवाजा'', ''कातिब'', ''ताबूत'', ''कच्ची दीवारें'', पत्थर गली'' और ''सिक्का'' विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

मृदुला सिन्हा

मृदुला सिन्हा के पात्र दुष्कर स्थितियों का सामना करते हुए, प्रगतिशील, वैज्ञानिक दर्शन से प्रेरित होकर शोषण मुक्ति के लिए अपनी जुझारू भूमिका का निर्वाह करते हैं। अनावश्यक रूढ़ियों, संस्कार और साम्प्रदायिकता के विरूद्ध चेतना पैदा करने वाले उनके पात्र हैं। उनकी कहानियाँ जहाँ कहाँ भी नाटकीय मोड़ लेती हैं, हृदय और मस्तिष्क दोनों को झनझना देती हैं।

बटरोही

बटरोही की अधिकांश कहानियाँ मानवी चिन्ताओं की कहानियाँ हैं। ये चिन्ताएँ – जो दशक आन्दोलन बाद या प्रवृत्तियों की नहीं सिर्फ मनुष्य की हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने मानव की गम्भीर समस्याओं को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। ये कहानियाँ एक जटिल धरातल पर उपलब्ध रचनात्मक असफलताओं से गुजरकर आगे बढ़ने को प्रेरित करती है और मानव को विवश नहीं होने देती है। इनके प्रसिद्ध आलोच्य कथा संग्रहों में विकल्प और ''सड़क का भूगोल'' आदि प्रमुख है। इसके कुछ घण्टे ''अस्तारंण'', ''नेक आदमी'', ''प्रेत'', ''फिम्पुरूष'', ''काना लैंपपोस्ट सराय'' और ''कनकटा चश्मा'', ''प्रतीत गामी'', ''कटखने'', ''मन नहीं दस बीस'', ''क्यों और कहाँ है'' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बलवन्त सिंह

बलवन्त सिंह हिन्दी के उन कहानीकारों में एक हैं जो निर्विवाद कहानियाँ लिखने में विश्वास रखते हैं। मनुष्य के प्राणिक आवेगों और उसकी स्वाभाविक गति – प्रगति की प्रीतिकर और यथातथ्य ढंग से पेश करना उनकी रचनात्मक का खास अंग है। मानववृत्तियों की इस उद्‌घाटन प्रक्रिया में पात्रों का अपना काल परिवेश, उनकी पारिवारिक, सामाजिक और जातीय विशेषतायें जिस प्रकार उद्‌घटित होती है उससे कहानी को एक गहरी विश्वासनीयता प्राप्त होती है। इनकी कहानियाँ पाठक पर जीवन के कई रंग छीटती है जिनसे वह सहज ही सरावोर हो उठता है। इसके साथ–साथ इनकी कहानियों में उच्च मध्यम वर्ग के भोगवादी मन पतनशील, जीवन मूल्यों और विकृत यौन भावनाओं को रेखांकित करती हैं

कुछ कहानियाँ अपनी अलग तरह की छाप छोड़ती है जो समकालीन मनुष्य और समाज के निरन्तर भावों को प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत करती हैं। इसके अनसंधेय कथा संग्रह इस प्रकार है – ऐसी, ऐसी। पहला पथ चिलमन और मेरी प्रिय कहानियाँ आदि प्रमुख है। तीन पत्र तृप्ति, चन्द्रलोक, ''ग्रेड होटल'', सतरंगा कबूतर कन्यादान, हुस्न वाले ''तन्त्र'', ''चीता'', ''शुक्रिया'', ''गनहिल पर रिमझिम'' आदि प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। जो न तो दार्शनिक के बोझ में दबी हैं और न कला की बारीकियों में लटकी हैं, बल्कि पाठक इन्हें पढ़ते हुए ताजगी और जिन्दादिली का अनुभव करता है और एक सरल सम्मोहन सा मन पर छा जाता है।

नरेन्द्र मौर्य

नरेन्द्र मौर्य जीवन के यथार्थ को गम्भीर दृष्टि से सोचने वाले एक प्रतिष्ठित कथाकार है। इनकी कहानियों में मुख्यतः दो तत्व नजर आते हैं। एक तो कहीं पर गहरा दिखाई देता है तो दूसरी ओर कहीं पर कटु और अमानवीय यथार्थ। आपकी कहानियाँ प्राचीन रूढ़ियों को लिये हुए हैं जो नारी को ऊँचा नहीं उठने देती हैं साथ ही उसकी आपकी तो दूसरी ओर कहीं पर कटु और अमानवीय यथार्थ। आपकी कहानियाँ प्राचीन रूढ़ियों को लिये हुए है पाठकों को आन्दोलित करने में पूरी तरह समर्थ और सफल है। आपके प्रमुख कथा संग्रह ''कोलम्बस जिन्दा है'' और साथ–साथ है'', ''कमीज'', ''रिश्ते'', ''बिखरे–बिखरे सन्दर्भ'', ''गिरगिट'', ''माहौल'', ''''दूसरी औरत अस्वीकार'', ''भैया साहब का पटापेक्ष'', ''परिधि'', ''नीलामी'' और ''कोलम्बस जिन्दा है'' आदि प्रमुख आलोच्य कहानियाँ है। जिनमें भारतीय सामाजिक रूढ़ियों की स्पष्ट झलक दिखायी देती हैं।

सन्दर्भ –

1. रामधारी सिंह ' दिनकर ' य रश्मिलोक , पृ . सं . 215
2. धूमिल य संसद से सड़क तक , पृ . सं . 115
3. वागर्थ , जुलाई 2008 पृ . सं . 42
4. अभिमन्यु अनत , समग्र कविताएँ , काव्य संग्रहः गुलमोहर खिल उठा , पृ . सं . 258
5. सत्येन्द्र प्रताप सिंह , हिंदी कथा साहित्य में अंतरलिंगी समाज , समसामयिक सृजन , जुलाई – दिसम्बर 2014, पृ . सं . 49
6. जगदीश गुप्त, शम्बूक य प्रतिपक्ष , पृ . सं . 44
7. लीलाधर जगूड़ी , नाटक जारी है , पृ . सं . 18
8. नरेश मेहता, प्रवाद पर्व , पृ . सं . 30